आहे हीणिन जो हमराहु बाबलु शेरु बली। भव सागर पार उतारण कृपा नांव चली।।

कृपा बाबल जी आहे प्यारी।
हिते हुते जा करे रखवारी।
मिटाए माया ऊंदिह सारी।
राम नाम जी करे उजियारी।
जेका पाले सिभनी जीविन खे थी भांति भली।।
कृपा नांव चली।।

हरी कथा फुलवाड़ी फूली—
देहि गेहि जी सुरित भूली।
प्रभु प्रेम जी मदिरा पी पी—
रस समाज जे आनन्द झूली।।
नेही नेणिन मंझि वसाई निकुंज थली।।
कृपा नांव चली।।

जिते किथे सभु नर नारियूं—
गाइनि कीरति करे किलकारियूं।
जै जै जानिब जी नितु बोलिनि—
नची कुदी से वज़ाइनि ताड़ियूं।।
दिलबर दरशन सांणु खिली दिलि जी कली।।
कृपा नांव चली।।

रिसड़ो राम जो जाहिरु कयड़ो
पासो प्रेम जो सिभनी पयड़ो।
अधमनि कारण ईश्वर दर में
वाह वसीलो वञण जो थियड़ो।।
मिहर मंझा देखारी गोविन्द घर गली।।
कृपा नांव चली।।

शील सिन्धु ऐं करुणा सागर प्रेम परा निधि रस रत्नाकर।

सदा सर्वदा प्रसन्न मूरित

सिभनी दिव्य गुणिन में आगर।। मैगिसिचन्द्र जा मंगल मनायूं मिली खिली।। कृपा नांव चली।।